चेव वत्तव्वं । णवरि उक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणाणि सव्वज्झवसाणट्ठाणाणमसंखेज्जा भागा होंति । एवं भागाभागपरूवणा समत्ता ।

सव्वत्थोवाणि णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि १६ । उक्कस्सियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो? अण्णोण्णब्भत्थरासी १६ । अजहण्ण-अणुक्कस्सट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि । को गुणगारो ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीयो । तस्स पमाणमेदं १६३ । ३२ । पुणो एदेण उक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणेसु गुणिदेसु अजहण्ण-अणुक्कस्सट्ठिदिबंधज्झ-वसाणट्ठाणपमाणं होदि १३०४ । अणुक्कस्सियासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणमेत्तेण १३२० । अजहण्णि-यासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणेहि परिहीणउक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणमेत्तेण १५६०✱ । सव्वासु ट्ठिदीसु अज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णट्ठिदि-अज्झवसाणमेत्तेण १५७६ ।

आउववज्जाणं छण्णं पि कम्माणं एवं चेव वत्तव्वं । आउअस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि थोवाणि । अजहण्णअणुक्कस्सियासु ट्ठिदीसु

आयुके विषयमें भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि आयुकर्मके उत्कृष्ट स्थिति सम्बन्धी अध्यवसान समस्त अध्यवसानस्थानोंके असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं । इस प्रकार भागाभाग प्ररूपणा समाप्त हुई ।

ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं (१६) । उत्कृष्ट स्थितिसम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार अन्योन्यभ्यस्त राशि है (१६) । अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसान-स्थान संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम डेढ गुणहानियां हैं । उसका प्रमाण यह है-- $\frac{१६३}{३२}$ । इसके द्वारा उत्कृष्ट स्थिति सम्बन्धी अध्यवसानस्थानोंको गुणित करनेपर अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है-- २५६×$\frac{१६३}{३२}$ = १३०४ । अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं ? जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । १३०४+ १६ = १३२० अजघन्य स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं-- १३२०+ (२५६ - १६) = १५६० । सब स्थितियोंमें अध्यवसा-नस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है-- १५६०+१६ = १५७६ ।

आयु कर्मको छोडकर छह कर्मोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा इसी प्रकारसे करना चाहिये । आयु कर्मकी जघन्य स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यव-सानस्थान स्तोक हैं । अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात-

✱ प्रतिषु १०६०५ एवंविधात्र संदृष्टिः ।

ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । अणुक्कस्सियासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणमेत्तेण । उक्कस्सियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । अजहण्णियासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? अजहण्ण-अणुक्कस्सट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणमेत्तेण । सव्वासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणमेत्तेण । एवं पगणणा त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

अणुकट्ठीए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जाणि ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि ताणि बिदियाए ट्ठिदीए बंधज्झवसाणट्ठाणाणि अपुव्वाणि✡ ।। २६९ ।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे संदिट्ठी उच्चदे । तं जहा– जहण्णट्ठिदीए विणा उक्कस्सट्ठिदिपमाणं सत्त ७ । धुवट्ठिदिपमाणं पंच ५। धुवट्ठिदीए सह उक्कस्सट्ठिदिपमाणमेदं १२। पुणो एदिस्से समयचरणं कादूण धुवट्ठिदिप्पहुडि उवरिमसव्वट्ठिदिविसेसेसु सव्वज्झ–

गुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात लोक हैं । अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? जघन्य स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार आवलिका असंख्यातवां भाग है । अजघन्य स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितियोंके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । सब स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? जघन्य स्थितियोंके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । इस प्रकार प्रगणना अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अनुकृष्टिकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं द्वितीय स्थितिमें वे स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं और अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान भी हैं ।। २६९ ।।

इस सूत्रका अर्थ कहते समय संदृष्टि कही जाती है । वह इस प्रकार है–– जघन्य स्थितिके विना उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण सात (७) है । ध्रुवस्थितिका प्रमाण पांच (५) है । ध्रुवस्थितिके साथ उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण यह है–– १२ । इसके समयोंकी

✡ सांप्रतमनुकृष्टिश्चिन्त्यते । सा च न विद्यते । तथा हि–– ज्ञानावरणीयस्य जघन्यस्थितिबन्धे यान्यध्यवसायस्थानानि, तेभ्यो द्वितीयस्थितिबन्धेऽन्यानि, तेभ्योऽपि तृतीयस्थितिबन्धेऽन्यानि, एवं तावद्वाच्यं यावदुत्कृष्टा स्थितिः । एवं सर्वेषामपि कर्मणां दृष्टव्यम् (१–२) । क. प्र. (म. टी.) १, ८८. ।

वसाणाणमसंखेज्जलोगमेत्ताणं तिरिच्छेण रचणा कायव्वा। एवं रचणं कादूण सव्व-ट्ठिदिविसेसट्ठिदअज्झवसाणट्ठाणाणं णिव्वग्गणाकंडयमेत्तखंडाणि कादव्वाणि। किं पमाणं णिव्वग्गणकंडयं ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। संदिट्ठीए तस्स पमाणं चत्तारि (४)। एदाणि खंडाणि किं समाणि, आहो विसमाणि ? ण होंति समाणि, विसमाणि✽ चेव। कधं णव्वदे ? परमाइरियोवदेसादो। तं जहा- पढमखंडादो बिदियखंडं विसेसाहियं असंखेज्जलोगमेत्तेण। बिदियखंडादो तदियखंडं विसेसाहियं असंखेज्जलोगमेत्तेण। तदियखंडादो चउत्थखंडं विसेसाहियमसंखेज्जलोगमेत्तेण। एवं णेदव्वं जाव चरिमखंडं त्ति। णवरि पढमखंडादो वि चरिमखंडं विसेसाहियं चेव। कुदो ? परमाइरियोवदेसादो बाहाणुवलंभादो च। एत्थ संदिट्ठी♠

एवं ठविय एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे-णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जाणि

रचना करके ध्रुवस्थितिको आदि लेकर आगेके सब स्थितिविशेषोंमें रहनेवाले असंख्यात लोक प्रमाण सब अध्यवसानस्थानोंकी तिरछे रूपसे रचना करना चाहिये। इस प्रकार रचना करके सब स्थितिविशेषोंमें स्थित अध्यवसानस्थानोंके निर्वर्गणाकाण्डक प्रमाण खण्ड करना चाहिये।

शंका-- निर्वर्गणाकाण्डकका प्रमाण कितना है ?

समाधान-- वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

संदृष्टिमें उसका प्रमाण चार (४) है।

शंका-- ये खण्ड क्या सम हैं, अथवा विषम ?

समाधान-- वे सम नहीं होते, विषम ही होते हैं।

शंका-- यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान-- यह श्रेष्ठ आचार्योंके उपदेशसे जाना जाता है। जैसे- प्रथम खण्डकी अपेक्षा द्वितीय खण्ड असंख्यात लोक मात्रसे विशेष अधिक है। द्वितीय खण्डकी अपेक्षा तृतीय खण्ड असंख्यात लोक मात्रसे विशेष अधिक है। तृतीय खण्डकी अपेक्षा चतुर्थ खण्ड असंख्यात लोक प्रमाणसे विशेष अधिक है। इस प्रकार अन्तिम खण्ड तक ले जाना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रथम खण्डकी अपेक्षा भी अन्तिम खण्ड विशेष अधिक ही है, क्योंकि, ऐसा ही उत्कृष्ट आचार्योंका उपदेश है, तथा उसमें कोई बाधा भी नहीं पायी जाती है। यहां संदृष्टि- (पृष्ठ ३४५ पर देखिये) इस प्रकार स्थापित करके इस सूत्रका अर्थ कहते हैं-- ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान

✽ अ-आ-काप्रतिषु 'विसमाणि ण होंति विसमाणि' ताप्रतौ 'विसमाणि ण होंति ? विसमाणि' इति पाठः। ♠ अत्रोपलभ्यमाना संदृष्टयः ३४५ तमे पृष्ठे द्रष्टव्याः।

ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि ताणि च बिदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि होंति, अपुव्वाणि च । कधमपुव्वाणं संभवो ? ण, बिदियट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणचरिमखंडज्झवसाणट्ठाणाणं धुवट्ठिदिअज्झवसाणेसु अभावादो । ण च जहण्णट्ठिदिसव्वज्झवसाणाणि बिदियट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणेसु अत्थि, जहण्णट्ठिदिपढमखंडज्झवसाणट्ठाणाणं बिदियट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणेसु अणुवलंभादो । तदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि अपुव्वाणि एत्थ वि जाणि बिदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि ताणि तदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणेसु होंति त्ति ण घेत्तव्वं, पढमखंडज्झवसाणट्ठाणाणं तदियट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणेसु अणुवलंभादो । कधमेदं णव्वदे ? ताणि सव्वाणि होंति त्ति णिद्देसाभावादो । अपुव्वाणि त्ति वुत्ते अपुव्वाणि चेव वत्तव्वं, च-सद्देण विणा समुच्चयावगमाभावादो । जदि एवं तो सुत्ते च-सद्दो किण्ण परूविदो ? ण, च-सद्दणिद्देसेण♠ विणा वि तदट्ठावगमादो ।

एवमपुव्वाणि अपुव्वाणि जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति । २७० ।

हैं वे भी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिमें हैं, तथा अपूर्व भी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं ।

शंका-- अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके अन्तिम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान ध्रुवस्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं हैं, तथा जघन्य स्थितिके सब अध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं हैं; कारण कि जघन्य स्थितिसम्बन्धी प्रथम खण्डके अध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं पाये जाते हैं । तृतीय स्थितिके अध्यवसानस्थान अपूर्व हैं यहां पर भी जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिमें हैं वे तृतीय स्थितिके अध्यवसानोंमें होते हैं, ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि द्वितीय स्थितिके प्रथम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान तृतीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं पाये जाते हैं ।

शंका-- यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, 'वे सभी होते हैं, ऐसा सूत्रमें निर्देश नहीं किया गया है, इसीसे उसका ज्ञान हो जाता है ।

सूत्रमें जो 'अपुव्वाणि' ऐसा निर्देश किया है उससे 'अपुव्वाणि चेव' अर्थात् अपूर्व भी होते हैं, ऐसा कथन करना चाहिये, क्योंकि, च शब्दके विना समुच्चयका ज्ञान नहीं होता है ।

शंका-- यदि ऐसा है तो सूत्रमें च शब्दका निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान--- नहीं, क्योंकि च शब्दके निर्देशके विना भी उक्त अर्थका ज्ञान हो जाता है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक अपूर्व अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं । २७० ।

♠ अ-काप्रत्योः '-णिद्देसोण' इति पाठः ।

एवं उत्तविधाणेण अपुव्वाणि अपुव्वाणि चेव ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि सव्वट्ठिदिविसेसेसु होदूण गच्छंति जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति । सव्वट्ठिदिविसेसेसु पुव्वट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि वि अत्थि, ताणि च अभणिदूण अपुव्वाणि चेव अत्थि, त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? ण, एवमिदि वयणादो चेव पुव्वाणं अत्थित्तसिद्धीदो । एवं वयणादो चेव पुव्वाणं व अत्थित्तसिद्धीए संतीए अपुव्वाणं पि णिद्देसो किमट्ठं कदो ? ण, अपुव्वपरिणामअत्थित्तपओजणत्तेण तप्पदुप्पायणे दोसाभावादो ।

जहण्णट्ठिदीए पढमखंडं उवरि केण वि सरिसं ण होदि । बिदियखंडं समउत्तरजहण्णट्ठिदीए पढमज्झवसाणखंडेण सरिसं । तदियखंडं दुसमउत्तरजहण्णट्ठिदीए पढमखंडेण सरिसं । चउत्थखंडं तिसमउत्तरजहण्णट्ठिदीए पढमखंडेण सरिसं । एवं णेयव्वं जाव णिव्वग्गणकंडयचरिमसमओ त्ति । तदो उवरिमसमए जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणाणमणुक्कट्ठी वोच्छिज्जदि, तत्थ एदेहि सरिसपरिणामाभावादो । एवं सव्वट्ठिदिविसेससव्वज्झवसाणाणं पादेक्कमणुक्कट्ठिवोच्छेदो परूवेदव्वो त्ति भावत्थो ।

इस प्रकार उक्त प्रक्रियासे उत्कृष्ट स्थितितक सब स्थितिविशेषोंमें होकर अपूर्व ही अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते जाते हैं ।

शंका— सब स्थितिविशेषोंमें जब पूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान भी हैं, तब उन्हें न कहकर 'अपूर्व ही हैं' ऐसा किसलिये कहा जाता है ।

समाधान— नहीं, क्योंकि 'एवं' अर्थात् 'इसी प्रकार' ऐसा कहनेसे ही पूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाता है ।

शंका— यदि 'एवं' पदका निर्देश करनेसे ही पूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाता है, तो फिर अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका निर्देश किसलिये किया गया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि यहां अपूर्व परिणामोंके अस्तित्वका प्रयोजन होनेसे उनके कहनेमें कोई दोष नहीं है ।

जघन्य स्थितिका प्रथम खण्ड आगे किसीके भी सदृश नहीं है । उसका द्वितीय खण्ड एक समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है । जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंका तृतीय खण्ड दो समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है । चतुर्थ खण्ड तीन समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता हैं । इस प्रकार निर्वर्गणाकाण्डकके अन्तिम तक ले जाना चाहिये । उससे आगेके समयमें जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके अनुकृष्टिका व्युच्छेद हो जाता है, क्योंकि, वहां इनके सदृश परिणामोंका अभाव है । इस प्रकारसे सब स्थितिविशेषोंके सब अध्यवसानोंमेंसे प्रत्येकमें अनुकृष्टिके व्युच्छेदकी प्ररूपणा करना चाहिये । यह उक्त कथनका भावार्थ है ।

संपहि अपुणरुत्तज्झवसाणपरूवणा कीरदे । तं जहा– जहण्णट्ठिदिमादिं कादूण जाव दुचरिमट्ठिदि त्ति ताव सव्वट्ठिदिविसेस(८)सव्वज्झवसाणाणं सव्वपढमखंडाणि अपुणरुत्ताणि । उक्कस्सट्ठिदीए सव्वखंडाणि अपुणरुत्ताणि चेव । सेस-दुचरिमादिट्ठिदीणं बिदियादिखंडाणि पुणरुत्ताणि, एदेहि समाणपरिणामाणमपुणरुत्तपरिणामेसु उवलंभादो।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ।। २७१ ।।

जहा णाणावरणीयस्स अणुकट्ठी परूविदा तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं । णवरि आउअस्स जहण्णट्ठिदीए णिव्वग्गणमेत्तअज्झवसाणखंडाणि पुव्वं व पढमखंड-प्पहुडि विसेसाहियाणि होंति । समउत्तरजहण्णट्ठिदिप्पहुडिसव्वज्झवसाणखंडाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि चेव । किंतु तत्थ समयाहियजहण्णट्ठिदीए दुचरिमखंडादो चरिमखंडमायामेण असंखेज्जगुणं । तदुवरिमट्ठिदीए पुण तिचरिमखंडादो दुचरिमखंडमसंखेज्जगुणं । तदो चरिमखंडमसंखेज्जगुणं । एवं णेदव्वं जाव णिव्वग्गणकंडयदुचरिमसमओ त्ति । पुणो तदुवरिमट्ठिदिप्पहुडि जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति ताव सव्वखंडाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण आयामेण असंखेज्जगुणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं । एत्थ वि अणुकट्ठिवोच्छेदो पुव्वं व परूवेदव्वो । एवमणुकट्ठी समत्ता ।

तिव्व-मंददाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जहण्णयं

अब अपुनरुक्त अध्यवसानोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— जघन्य स्थितिको आदि लेकर द्विचरम स्थिति तक सब स्थितिविशेषोंके सभी अध्यवसानस्थान सम्बन्धी सब प्रथम खण्ड अपुनरुक्त हैं। उत्कृष्ट स्थितिके सब खण्ड अपुनरुक्त ही हैं। शेष द्विचरम आदि स्थितियोंके द्वितीयादिक खण्ड पुनरुक्त हैं, क्योंकि, इनके समान परिणाम अपुनरुक्त परिणामोंमें पाये जाते हैं।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें अनुकृष्टिका कथन करना चाहिये ।२७१।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके विषयमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा की है, उसी प्रकार अन्य सात कर्मोंके सम्बन्धमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि आयुकी जघन्य स्थितिके निर्वर्गणाकाण्डक प्रमाण अध्यवसानखण्ड पूर्वके ही समान प्रथम खण्डको आदि लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं। एक समय अधिक जघन्य स्थितिको आदि लेकर सब अध्यवसानखण्ड परस्परकी अपेक्षा यथाक्रमसे विशेष अधिक ही हैं। परन्तु उनमें एक समय अधिक जघन्य स्थितिके द्विचरम खण्डसे अन्तिम खण्ड आयामकी अपेक्षा असंख्यातगुणा है। उससे आगेकी स्थितिके त्रिचरम खण्डकी अपेक्षा द्विचरम खण्ड असंख्यातगुणा है। उससे अन्तिम खण्ड असंख्यातगुणा है। इस प्रकार निर्वर्गणाकाण्डकके द्विचरम समय तक ले जाना चाहिये। फिर उससे आगेकी स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति तक सब खण्ड एक दूसरेकी अपेक्षा आयामसे असंख्यात गुणे होते हैं, ऐसा समझना चाहिये। यहां भी अनुकृष्टिके व्युच्छेदकी पूर्वके ही समान प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अनुकृष्टिका कथन समाप्त हुआ।

तीव्र-मन्दताकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी जघन्य स्थिति–

---

(८) ताप्रतौ 'सव्वट्ठिदिविसेसस्स' इति पाठः।

ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणं सव्वमंदाणुभागं◆॥ २७२ ॥

सव्वट्ठिदीसु पुणरुत्तट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि अवणिय अपुणरुत्ताणि✡ घेत्तूण एदमप्पाबहुगं वुच्चदे । सव्वमंदाणुभागमिदि वुत्ते सव्वजहण्णसत्तिसंजुत्तमिदि घेत्तव्वं। सेसं सुगमं।

तिस्से चेव उक्कस्समणंतगुणं ॥ २७३ ॥

तिस्से चेव जहण्णट्ठिदीए पढमखंडस्स अपुणरुत्तस्स उक्कस्सपरिणामो अणंतगुणो, असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो । चरिमखंडुक्कस्सपरिणामो ण गहिदो त्ति कधं णव्वदे ? जहण्णट्ठिदिउक्कस्सपरिणामादो समयाहियजहण्णट्ठिदीए जहण्णपरिणामो अणंतगुणो त्ति सुत्तणिद्देसादो णव्वदे ।

बिदियाए ट्ठिदीए जहण्णयं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं ।२७४।

पुव्विल्लउक्कस्सपरिणामो उव्वंको, एसो जहण्णपरिणामो अट्ठंको त्ति काऊण हेट्ठिमउक्कस्सपरिणामं सव्वजीवरासिणा गुणिदे उवरिमट्ठिदिजहण्णपरिणामो होदि, तेण अणंतगुणत्तं ण विरुज्झदे । उवरि पि उक्कस्सपरिणामादो जत्थ जहण्णपरिणामो अणंतगुणो त्ति वुच्चदि तत्थ एदं चेव कारणं वत्तव्वं ।

बन्धाध्यवसानस्थान सबसे मन्द अनुभागवाला है ॥ २७२ ॥

सब स्थितियोंमें पुनरुक्त स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंको छोडकर और अपुनरुक्तोंको ग्रहण करके यह अल्पबहुत्व कहा जा रहा है । ' सव्वमंदाणुभाग ' ऐसा कहनेपर सबसे जघन्य शक्तिसे संयुक्त है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । शेष कथन सुगम है ।

उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७३ ॥

उसी जघन्य स्थितिके अपुनरुक्त प्रथम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, क्योंकि वह असंख्यात लोक मात्र छहस्थान आगे जाकर स्थित है ।

शंका— अन्तिम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम नहीं ग्रहण किया गया है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—– जघन्य स्थितिके उत्कृष्ट परिणामसे एक समय अधिक जघन्यस्थितिका जघन्य परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा सूत्रमें निर्देश किया जानेसे उसका परिज्ञान होता है ।

द्वितीय स्थितिका जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है ॥२७४॥

पूर्वका उत्कृष्ट परिणाम ऊर्वंक और यह जघन्य परिणाम अष्टांक है, ऐसा करके अधस्तन उत्कृष्ट परिणामको सर्व जीवराशिसे गुणित करनेपर आगेकी स्थितिका जघन्य परिणाम होता है, इसी कारण उसके अनन्तगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । आगे भी जहांपर उत्कृष्ट परिणामकी अपेक्षा जघन्य परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहा जाता है वहां पर भी यही कारण बतलाना चाहिये ।

◆ संप्रति स्थितिसमुदाहारे या प्राक् तीव्र-मन्दता नोक्ता साभिधीयते —अणंतेत्यादि । तद्यथा- ज्ञानावरणीयस्य जघन्यस्थितौ जघन्यस्थितिबन्धाध्यवसायस्थानं सर्वमन्दानुभावम् । ततस्तस्यामेव जघन्यस्थितौ उत्कृष्टाध्यवसायस्थानमनन्तगुणम् । ततोऽपि द्वितीयस्थितौ जघन्यं स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणम् । ततोऽपि तस्यामेव द्वितीयस्थितौ उत्कृष्टमनन्तगुणम् । एवं प्रतिस्थिति जघन्यमुत्कृष्टं च स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणतया तावद्वक्तव्यं यावदुत्कृष्टायां स्थितौ चरमं स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणम् (१–३) । क. प्र. (म. टी.) १, ८९. । ✡ अ-आ-का-प्रतिषु – पुणरूत्ताणि ' इति पाठः ।

तिस्से चेव उक्कस्समणंतगुणं ॥ २७५ ॥

असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो ।

तदियाए ट्ठिदीए जहण्णयं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं ।२७६।

कारणं सुगमं, पुव्वं परूविदत्तादो ।

तिस्से चेव उक्कस्सयमणंतगुणं २७७ ॥

असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो ।

एवमणंतगुणा जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति ॥ २७८ ॥

एवं पुव्वुत्तकमेण अणंतगुणाए सेडीए णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति । णवरि उक्कस्सियाए ट्ठिदीए जहण्णादो उक्कस्समणंतगुणमिदि वुत्ते चरिमखंडुक्कस्सपरिणामो अणंतगुणो त्ति घेत्तव्वं ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २७९ ॥

जहा णाणावरणीयस्स तिव्वमंददाए अप्पाबहुगं परूविदं तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो । एवं तिव्व-मंददा त्ति समत्तमणुयोगद्दारं । एवं ट्ठिदिसमुदाहारो समत्तो । एवं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणपरूवणा समत्ता । एवं वेयणकालविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है ॥ २७५ ॥

क्योंकि, वह जघन्य परिणामसे असंख्यात लोक प्रमाण छह स्थान आगे जाकर स्थित है ।

उससे तृतीय स्थितिका जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है । २७६ ।

इसका कारण सुगम है, क्योंकि, वह पूर्वमें बतलाया जा चुका है ।

उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम उससे अनन्तगुणा है । २७७ ।

क्योंकि, वह उससे असंख्यात लोक मात्र छह स्थान आगे जाकर स्थित है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक वे अनन्तगुणे हैं ॥ २७८ ॥

इस प्रकार अर्थात् पूर्वोक्त क्रमसे उत्कृष्ट स्थिति तक अनन्तगुणित श्रेणिसे ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट स्थितिके जघन्य परिणामकी अपेक्षा उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहनेपर अन्तिम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वको कहना चाहिये ।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें कहना चाहिये, क्योंकि वहां उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार तीव्र मन्दता अनुयोगद्वार समाप्त हुआ । इस प्रकार स्थिति-समुदाहार समाप्त हुआ । इस प्रकार स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इस प्रकार वेदनकालविधान अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।